जलवा दिखाके यार ने दीवाना कर दिया -- जिगर मोरादाबादी

जलवा बा क़द्र-ए-ज़र्फ़ नज़र देखते रहे, क्या देखते हम उनको मगर देखते रहे।
अपना ही अक्स पेश ए नज़र देखते रहे, आईना रु-बा-रु था जिधर देखते रहे।
वो आये थे, और आके चले भी गए जिगर, हम महवियत में जाने किधर देखते रहे।

1. जलवा दिखाके यार ने दीवाना कर दिया
   खुद शम्मा बन गए मुझे परवाना कर दिया ||

   वही आबले हैवही जलन। मेरेसोज़ ए दिलमें कमी नहीं
   जो लगाके आगगये हो तुम। वो लगीहुई है बुझीनहीं
   तेरी याद ऐसीहै बावफ़ा, पस-ए-मार्गभी न हुईजुदा
   तेरी याद मेंहम मिट गये, तेरी याददिल से मिटीनहीं

2. साक़ी की चश्म-ए-मस्त ने मस्ताना कर दिया
   ऐसी पिलाई मुझको के दीवाना कर दिया ||

3. क्या मांगते हो मुझ से मेरे पास कुछ नहीं
   इक दिल था वो भी आपको नज़राना करदिया ||

4. ये हुस्न ये निखार, ये आँखों की मस्तियाँ
   जिस पे निगाह पड़ गयी, मस्ताना कर दिया ||

5. हम भी गए थे बज़्म में दीदार के लिये
   सब कुछ निसार जलवा-ए-जानना कर दिया ||

   ठुकराए याकुबूल करे उसकी बात है
   हम नेतो पेश जानका नज़राना करदिया